मुझे चाँद चाहिए : नारी चेतना

डॉ. महेन्द्र सिंह

प्रकाशक
एनहांस्ड रिसर्च पब्लिकेशन्स
रोहतक, हरियाणा–124001

मुझे चाँद चाहिए : नारी चेतना

डॉ. महेन्द्र सिंह

प्रकाशन तिथि :
नवंबर 2017

ISBN : 978-81-933004-2-8 (HB)

मूल्य : 475.00
20 डालर

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

Publisher :
Enhanced Research Publications
India
An International Journals and Books Publisher

Phone : 8607698989, 8684930049
E-mail : erpublications@gmail.com
Website : www.erpublications.com

Typeset by : www.gipg.org
Book Available : www.erpublications.com
www.amozon.in
www.gipg.org

Branch Office :
ER Publications, Rohtak
Shop No. 33, Agromall Sector-14
Rohtak, Haryana-124001
Phone : +91 8607698989

समर्पण

स्व. माता–पिता
की
पावन स्मृति
में सादर
श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित।

सन्देश

मुझे डॉ0 महेन्द्र सिंह की समीक्षात्मक कृति 'मुझे चाँद चाहिए: नारी चेतना' की पांडुलिपि के अनुशीलन का अवसर मिला। निश्चय ही लेखक ने विषय के प्रतिपादन में बेहद परिश्रम किया है। उनकी स्थापनाएँ आलोचनात्मक विवेक से सम्पन्न है।

मैं लेखक को ऐसी उत्तम कृति के प्रणयन पर हृदय से बधाई देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि वह इसी प्रकार हिन्दी साहित्य की सेवा करते रहें।

ikQlj t;flg uhjn
पूर्व निदेशक
कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा
भाषा विज्ञान विद्यापीठ
डॉ0 भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय
आगरा (उत्तर प्रदेश)

अनुक्रमणी

क्र०	विषय	पृ0 संख्या
1-	**v/;k;%** **pruk%fo'y"k.k** (i) चेतनाः अर्थ एवं स्वरूप (ii) चेतनाः परिभाषाएँ (iii) चेतनाः निष्कर्ष	**1&9**
2-	**v/;k;%** **ukjh % pruk** (i) शब्द : व्युत्पत्ति (ii) परिभाषा एवं स्वरूप	**10&13**
3-	**v/;k;%** **ukjh pruk dk fodkl dh lh<h** 1. वैश्विक संदर्भ में (i) पारम्परिक दृष्टिकोण वैश्विक संदर्भ में (ii) नारी चेतना आन्दोलन वैश्विक संदर्भ में 2. भारतीय संदर्भ में (i) पारम्परिक दृष्टिकोण भारतीय संदर्भ में (ii) नव जागरण और नारी भारतीय संदर्भ में (a) सामाजिक स्थिति (b) कानूनी अधिकार 3. स्वाधीन भारत में नारी चेतना (i) स्वाधीन भारत में सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों से संघर्ष (ii) स्वाधीन भारत में आर्थिक स्वावलंबन के लिए संघर्ष (iii) स्वाधीन भारत में पितृसत्तात्मक व्यवस्था	**14&34**

4- v/;k;% 35&72

lkekftd LorU=rk ds izfr ltx ukjh

(i) परम्पराओं एवं रूढ़ियों का विरोध

(ii) स्व के प्रति सजग नारी

(iii) महत्वाकांशी नारी

(iv) पितृसत्ता के प्रति सजग नारी

(v) मातृत्व बनाए रखने की चाह

5- v/;k;% 73&105

vkfFkZd LorU=rk ds izfr ltx ukjh

(i) आर्थिक स्वावलंबन

(ii) स्वतन्त्र व्यक्तित्व

(iii) कर्तव्य के प्रति सजग नारी

(iv) अस्मिता की तलाश में संघर्षरत नारी

6- v/;k;% 106&127

vfLrRo ,oa vf/kdkjksa ds izfr ltx ukjh

(i) स्वतन्त्र जीवन यापन

(ii) स्वच्छन्द प्रेम भावना

(iii) अस्तित्ववादी मूल्यांकन

fu"d"kZ 128&131

प्राक्कथन

हिन्दी उपन्यास साहित्य जगत में सुरेन्द्र वर्मा जी का योगदान अविस्मरणीय है। एक साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। व्यैक्तिकता को निवैयक्तिकता में परिणित करना ही कला है जो पाठकों को मंत्रमुग्ध करती है। समय के सच को उजागर करने के साथ गुणात्मक साहित्य सदैव प्रासंगिक रहता है तथा जन मानस को आलोक प्रदान करने के साथ दिशा–निर्देश भी देता है। सुरेन्द्र वर्मा भारतीय परम्परा से विषय वस्तु का चयन करके उसको आधुनिक समाज अनुकूल प्रस्तुत करते है। श्री वर्मा जी ने 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में यथार्थधर्मिता के धरातल पर अनुद्घाटित आयामों को खोजकर अपनी विचारधारा को प्रस्तुत किया है। उन्होंनें अपने उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में नारी जीवन के संघर्ष की विविध स्थितियों का चित्रण किया है। शाहजहाँपुर की निम्न मध्यवर्गीय किशोरी सिलबिल के अपने छोटे शहर के दकियानूसी परिवेश से निकलकर दिल्ली के रंगमंच और फिर मुंबई के सिनेमा जगत में एक ख्याति प्राप्त अभिनेत्री बनती है। आत्मान्वेशण और आत्मोपलब्धि की इस कंटक–यात्रा में एक ओर वर्षा अपने परिवार के तीखे–विरोध से लहूलुहान होती है और दूसरी ओर आत्मसंशय, लोकापवाद और अपनी रचनात्मक प्रतिभा को मांजने–निखारने वाली दुरूह, काली प्रक्रिया से क्षत–विक्षत। पर उसकी कलात्मक आस्था उसे संघर्ष–पथ पर आगे बढ़ाती जाती है।

मानव को अगर अपने जीवन में दुःख, शोषण, अन्याय, अत्याचार से मुक्ति पानी है तो उसमें साहस का होना अति आवश्यक है। बिना साहस के कोई कुछ नहीं कर सकता। नारी में भी अपने अंदर इसी साहस को प्रोत्साहित कर सदियों से चले आए शोषण से मुक्ति प्राप्त कर ली। समयानुसार नारी की स्थिति में कई परिवर्तन आए गए। स्वार्थी समाज ने उसे शोषित किया, किन्तु उसकी ममता, करूणा, त्याग, सामर्थ्य संवेदनशील हृदय से उसे जीवन की विसंगतियों और विपरीत परिस्थितियों से झूझते हुए भी चुनौतियों का सामना करने की शक्ति

दी। उसकी इसी उर्जा ने उसे कल्याणी बनाया तथा उनके रूप भी दिए। उसने पुरूषों के सत्ता वाले समाज में अपनी सार्थक उपस्थिति के साथ–साथ नारी शक्ति की महत्ता का स्वर भी बुलंद किया, उसके झंडे गाड़े और दिखा दिया कि जीवन के सफर में वह न केवल पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है, वरन् अपनी समस्त प्राकृतिक, सहजता, कोमल भावनाओं और ममतामयी छवि के साथ शौर्य, पराक्रम एवं साहस की दुनिया में नए आयाम छूने की क्षमता रखती है।

सुरेन्द्र वर्मा जी ने अपने उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में भारतीय नारी के मन की जिजीविषा, सूक्ष्म भावनाओं, उसकी चटपटाहट मानसिकता, अंतर्द्वन्द्व, बाह्य तथा आंतरिक संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंनें परम्पराओं में जकड़ी नारी को मुक्त कर एक स्वतन्त्र अस्तित्व दिलाने का प्रयास किया है, जिसमें उन्हें अत्याधिक सफलता भी मिली है। श्री वर्मा जी नारी को न देवी का स्थान दिलाना चाहते हैं, न दासी का वरन् उनका अभिप्राय तो उसे केवल मानवीय रूप से न्याय दिलाना मात्र है।

एक मानवीय इकाई के रूप में सभ्यता एवं संस्कृति के सर्वांगीण विकास में नारी की भागीदारी हमेशा से महत्वपूर्ण रही है। आज नारी अपने जीवन के ठोस निर्णय खुद लेने लगी है। नारी के कदम तेजी से प्रगति की ओर बढ़ रहे है। नारी जीवन और नारी के व्यक्तित्व को समाज में प्रतिष्ठा दिलाकर वह समाज में अपनी भूमिका निभाना चाहती है। अतः नारी को पारंपरिक रूढ़ियों, मान्यताओं, अंधविश्वासों के शोषण से मुक्त कर उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व को समाज में प्रतिष्ठित करना ही 'नारी चेतना' है।

इस अवसर पर मुझे गुरूजन प्रो. डॉ0 जयसिंह 'नीरद' पूर्व निदेशक कन्हैयालाल मुन्शी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ डॉ0 भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा, डॉ0 राधाकृष्ण चंदेल पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय भिवानी व डॉ0 ओमदत्त शर्मा, पूर्व प्राचार्य बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम (भिवानी) स्मृति पटल पर आ जाते हैं। इन्होंनें सदैव मुझे बेटे का सम्मान दिया है। इनके साथ हुए विचार–विमर्श के द्वारा मुझे सर्वदा नवीन प्रेरणा, उत्साह, आत्मविश्वास मिला है। इनका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

मेरी अपनी जीवन संगिनी प्रीति देवी जिसने इस कृति के लेखन कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन्होनें सभी परिस्थितियों में मुझे सबल प्रदान कर जो अनन्य सहयोग दिया है वह शब्दातीत है। इस प्रेरणा और सहयोग के लिए धन्यवाद देकर मैं औपचारिकता का निर्वाह नहीं करना चाहता।

प्रस्तुत कृति के प्रणयन में मेरी पुत्री रिचा का भी आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंनें मेरी व्यवस्थता को समझते हुए बड़े ही धैर्य एवं शान्त माहौल में घर के अन्दर तथा बाहर यथासंभव मुझे सहयोग दिया है।

इस कृति को प्रकाशित करने हेतु समय–समय पर उत्साहित करने वाले डॉ0 राकेश भारद्वाज, प्राचार्य बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम, डॉ0 जोगेन्द्र कुमार संस्कृत विभागाध्यक्ष, बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम व श्री जसवंत सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम (भिवानी) एवं मेरे साथियों और मित्रों का धन्यवाद ज्ञापन करना भी मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिनका निरन्तर सहयोग एवं सुझाव मिलता रहा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए अमित भारद्वाज, अमन भारद्वाज ER Publications रोहतक व टंकन कार्य के लिए जोगिन्द्र सिंह छपारिया, तोशाम का हार्दिक कृतज्ञ हूँ, जिनके सत्प्रयास से यह पुस्तक आप विद्वज्जनों के समक्ष है। मैं विद्वज्जनों से त्रुटियों के लिए विनम्र क्षमा याचना करता हुआ संशोधन हेतु सुझावों के लिए सविनय सादर निवेदन करता हूँ।

MkO egUæ flg
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
बनवारी लाल जिन्दल सुईवाला महाविद्यालय
तोशाम (भिवानी)